International Journal of Applied Research 2023; 9(7): 85-88

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2023; 9(7): 85-88
www.allresearchjournal.com
Received: 09-05-2023
Accepted: 13-06-2023

**डॉ. संजय कुमार झा**
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. संजय कुमार झा**
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, बिहार, भारत

# मिथिला के भू-राजनीतिक परिदृश्य का पुनरावलोकन

## डॉ. संजय कुमार झा

**सारांश**
मिथिला एक प्राचीन स्वायत्त प्रभूत्व सम्पन्न सार्वभौम राज्य था जो वर्तमान में भारत का एक समृद्ध सांस्कृतिक क्षेत्र है जिसमें बिहार राज्य के तिरहुत, दरभंगा, मुंगेर, कोसी, पूर्णिया और भागलपुर प्रमंडल तथा झारखंड के संथाल परगना प्रमंडल के साथ-साथ नेपाल के तराई क्षेत्र के कुछ भाग भी शामिल हैं। समस्त मिथिला क्षेत्र में हिमालय से उतरने वाली नित्यवाही और बरसाती नदियों का जाल बिछा है। यहां सालाना वर्षा औसतन 1142 मि मी से अधिक होती है। कमला, बागमती, कोशी, करेह और अधवारा समूह की नदियों से उत्पन्न बाढ़ हर वर्ष लाखों लोगों के लिए तबाही लाती है। एक सामान्य उदाहरण है जहां जन एवं जल संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र होते हुए भी इसका भरपूर उपयोग नहीं किया जा रहा है जो इस प्रदेश के लिए सदा ही प्राकृतिक तबाही और विपदा का मूल सबब रहा है और अंततः लोगों को अभाव एवं गरीबी में जीवन यापन करने अथवा सामान्य जन को बाहर पलायन के लिए मजबूर करती है । राजनीतिक शक्तियों ने मिथिला की भलाई नहीं की। इसी वजह से देश की आजादी के 75 साल के बाद भी मिथिला से बाढ़ का निदान नहीं हो पाया एवं लोगों का पलायन होता रहा। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को छोड़कर किसी राजनीतिक नेता ने मिथिला पर ध्यान नहीं दिया। सबों ने अपने अपने हित के लिए काम किया। आज नई पीढ़ी को मिथिला राज्य के आंदोलन से जुड़ना चाहिए।

**कूटशब्द** : भू-राजनीतिक परिदृश्य, पुनरावलोकन, भौगोलिक अवस्थिति, राजनैतिक सानिध्य

## प्रस्तावना
### ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
मिथिला प्राचीन भारत में एक राज्य था। वर्तमान में मिथिला एक सांस्कृतिक क्षेत्र है जिसमें बिहार के तिरहुत, दरभंगा, मुंगेर, कोसी, पूर्णिया और भागलपुर प्रमंडल तथा झारखंड के संथाल परगना प्रमंडल के साथ-साथ नेपाल के तराई क्षेत्र के कुछ भाग भी शामिल हैं। मिथिला की लोकश्रुति कई सदियों से चली आ रही है जो अपनी बौद्धिक परम्परा के लिये भारत और भारत के बाहर जानी जाती रही है। इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा मैथिली है। हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका संकेत शतपथ ब्राह्मण में तथा स्पष्ट उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है। मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में हुआ है। जनकपुर नेपाल का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है ये नगर प्राचीन काल में मिथिला की राजधानी माना जाता है। यहाँ पर प्रसिद्ध राजा जनक थे। जो सीता माता के पिता थे। यह शहर भगवान राम की ससुराल के रूप में विख्यात है।

कहा जाता है कि पवित्र जनक वंश का कराल जनक के समय में नैतिक अद्यःपतन हो गया। कौटिल्य ने प्रसंगवश अपने अर्थशास्त्र में लिखा है कि कराल जनक ने कामान्ध होकर ब्राह्मण कन्या का अभिगमन किया। इसी कारण वह बन्धु-बांधवों के साथ मारा गया। अश्वघोष ने भी अपने ग्रंथ बुद्ध चरित्र में इसकी पुष्टि की है। कराल जनक के वध के पश्चात जनक वंश में जो लोग बच गए, वे निकटवर्ती तराई के जंगलों में जा छुपे। जहां वे लोग छिपे थे, वह स्थान जनक के वंशजों के रहने के कारण जनकपुर कहलाने लगा।

## भौगोलिक अवस्थिति एवं विस्तार

मिथिला क्षेत्र उत्तरी बिहार के मध्य भाग में अवस्थित एक प्राचीन कृषि प्रधान सांस्कृतिक क्षेत्र है। इसका भौगोलिक विस्तार $25^{0}43'$ से $26^{0}27'$ उत्तरी अक्षांश एवं $85^{0}25'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला है। इस जिला का भौगोलिक क्षेत्रफल 2,54,077 हेक्टेयर है जिसमें 2,44,860 हेक्टेयर फसल क्षेत्र है। 2001 के जनगणना आँकड़ों के मुताविक इसकी जनसंख्या 32,85,473 है। यह क्षेत्र कोशी, बलान, कमला, अधवारा समूह, बूढ़ी गंडक, बागमती इत्यादि प्रमुख नदियों के निक्षेप से निर्मित जलोढ़ मिट्टी का समतल मैदानी भाग है जो काफी उर्वरा है। यह प्रदेश मौनसूनी जलवायु से प्रभावित है। यहां वार्षिक वर्षा सामान्यतः 100-150 सेंटीमीटर के बीच होती है जिसका अधिकांश भाग वर्षा ऋतु (मध्य जून से मध्य सितम्बर) में होती है। यह मानसूनी पतझड़ वन का प्रदेश है लेकिन यहां प्राकृतिक वन नगण्य है। भृंगदूत, शक्ति-संगम तंत्र, मिथिला भाषामय रामायण आदि ग्रंथों ने तीरभुक्ति की इस भौगोलिक स्थिति की संपुष्टि की है। प्रो0 राधाकृष्ण चौधरी, डा0 उपेन्द्र ठाकुर, श्याम नारायण सिंह आदि जैसे इतिहासकारों ने भी इसे स्वीकारा है।

## स्थानिक परिवेश

बिहार का छठा सबसे बड़ा शहर दरभंगा बागमती नदी के किनारे बसा हुआ है। उत्तरी बिहार में दरभंगा प्रमंडल का दरभंगा एक जिला है। दरभंगा को मिथिला की राजधानी भी कहा जाता है। समझा जाता है कि दरभंगा शब्द फारसी भाषा के दर-ए-बंग से निकला है। इसका मतलब होता है बंगाल का दरवाजा। इसका मैथिली करण होते हुए यह नाम दरभंगा तक पहुंचा है। यह भी कहा जाता है कि मुगल काल में दरभंगी खां ने इस शहर को बसाया था। दरभंगी खां ब्राह्मण थे। उन्होंने कालांतर में इस्लाम धर्म अपना लिया था। सन 1845 में ब्रिटिश सरकार ने दरभंगा सदर को अनुमंडल बनाया और सन 1864 में दरभंगा शहर नगर निकाय बन गया। सन 1875 में स्वतंत्र जिला बनने तक यह तिरहुत के साथ था । 1908 में तिरहुत के प्रमंडल बनने पर इसे पटना प्रमंडल से हटाकर तिरहुत में शामिल कर लिया गया । आजादी मिलने के बाद 1972 में दरभंगा को प्रमंडल का दर्जा देकर मधुबनी तथा समस्तीपुर को इसके अंतर्गत रखा गया। जिले में हिमालय से उतरने वाली नित्यवाही और बरसाती नदियों का जाल बिछा है। कमला, बागमती, कोशी, करेह और अधवारा समूह की नदियों से उत्पन्न बाढ़ हर वर्ष लाखों लोगों के लिए तबाही लाती है। यहां सालाना औसत 1142 मि.मी. वर्षा होती है।

## राजनैतिक सानिध्य एवं संरक्षण

मिथिला क्षेत्र का राजनीतिक इतिहास खोज की दृष्टि से काफी रोचक एवं अत्यन्त हीं महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय राजनीतिक परिवेश में सम्राट हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात देश की राजनीतिक एकता खण्डित हो चुकी थी तथा सम्पूर्ण देश कई राजनीतिक ईकाईयों में विभक्त हो चुका था। यद्यपि मिथिला कभी भी स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में अपने सार्वभौमिकता को प्राप्त नहीं कर सका, लेकिन किसी न किसी राजनीतिक सम्प्रभु के अधीन यह अपनी पहचान सतत् बनाये रखा। इतना ही नहीं, गुप्तोत्तरकालीन भारत पर होने वाले विदेशी आक्रमणों का भी दायित्व इन्हीं क्षेत्रीय प्रदेशों पर कायम था, जिसका एक ज्वलन्त उदाहरण मिथिला भी था। यद्यपि क्षेत्रीय शासकों ने अपनी बुद्धिमत्ता, वीरता तथा रणकौशल से देश की राजनीतिक व्यवस्था को सुदृढ़ एवं मजबूत करने में प्रयत्नशील रहे, किन्तु इस दौरान आपसी द्वेष एवं उससे उपजी लड़ाइयाँ, सामन्तवादी व्यवस्था एवं पारस्परिक विश्वास के अभाव के कारण देश की राजनीतिक विखण्डीकरण की प्रवृति को नहीं रोका जा सका।

वस्तुतः मिथिला का राजनीतिक जीवन देशी एवं विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण तथा रक्तपात का इतिहास है। युद्धरत राज-शक्तियों के रणकौतुक के बीच मिथिला की राजनीतिक संरचना का एक स्पष्ट स्वरूप का खोजा जाना वस्तुतः मिथिला के इतिहास में एक खोज का विषय बनता है क्योंकि, उस दौरान मिथिला को अनेक समर-रत राजशक्तियों की दासता की कठिन श्रृंखला में बँधने हेतु बाध्य होना पड़ा। ऐसा प्रतीत हुआ कि मिथिला एक आपदा की घड़ी के दौर से गुजर रहा है तथा यह क्षेत्र नेतृत्वविहीन हो चुका है। मिथिला में यह परिस्थिति किसी न किसी रूप में ग्यारहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण तक बनी रही।

## राजनैतिक मांग औरं समर्थन

मिथिला राज्य की मांग बहुत पुरानी है। यह माँग आजादी से भी पहले की है। 1912 में जब बिहार बंगाल प्रोविंस से

निकल कर एक अलग स्टेट बना। उसी समय से एक अलग मिथिला स्टेट की मांग शुरू हो गई थी। तब से लेकर अब तक बिहार राज्य से निकलकर 1936 में ओडिशा और 2000 में झारखंड अलग राज्य बन चुके हैं। वहीं दूसरी तरफ अलग मिथिला राज्य की मांग चलती रही। मिथिला राज्य के एक्टिविस्ट दो मांगों को लेकर आंदोलन करते रहे। पहली मांग थी, 'मिथिलांचल' के नाम से एक अलग मिथिला राज्य बनाना और दूसरी मांग मैथिली भाषा को भारत सरकार की आठवीं अनुसूची में शामिल करना। झारखंड के अलग राज्य बनाने के बाद से ये मांगें और भी तेज हो गई। ताराकांत झा और दूसरे मैथिल एक्टिविस्ट ने इन मांगों को लेकर आंदोलन तेज कर दिए। जिसके फलस्वरूप अटल बिहारी वाजपयी की सरकार ने 2002 में मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर लिया। तबसे इन एक्टिविस्ट का एकसूत्री मांग है एक नए 'मिथिलांचल' राज्य को बनाना। खासकर तेलंगाना राज्य बनने के बाद से मिथिला क्षेत्र में ऐसे संगठन विस्फोटक तरीके से बनने लगे हैं। पर इस बार युवा लड़के और लड़कियों ने मोर्चा खोला है। इन्हीं युवा में से एक लड़की और मिथिला मुक्ति मोर्चा की सचिव कंचन मिश्रा ने बताया "पहली बात तो हम बिहारी नहीं हैं, हम मैथिल हैं और यही हमारी पहचान है। हमारे मिथिला को जबरदस्ती बिहार में मिला दिया गया है और बिहार में हमारे साथ भेदभाव किया जाता है। यहां तक कि बिहार गीत में भी मैथिली और मिथिला की उपेक्षा की गई है। पूरे बिहार गीत में ना तो कवि विद्यापति है ना ही मां जानकी।'

## राजनैतिक उपेक्षा एवं मुद्दे

"विकास के नाम पर भी मिथिला की उपेक्षा की गई। आज कोई भी कारखाना, यूनिवर्सिटी खोलने की मांग होती है तो उसे मगध एरिया में धकेल दिया जाता है। आईआईटी की बात हो या सेंट्रल यूनिवर्सिटी की। मिथिला हमेशा से उपेक्षित रहा है। यही वजह है कि आज अलग मिथिला राज्य के आंदोलन को गति मिल रही है।" अनूप कुमार मैथिल जो कि मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन के सेक्रेटरी हैं। युवा नेता अनूप इस समय 23 साल के हैं। अनूप कुमार मैथिल ने बताया कि अपने यहां स्टेट भाषा के मुताबिक बने हैं। मिथिला की अपनी एक अलग संस्कृति और एक अलग भाषा है। मिथिला हमेशा से एक अलग राज्य रहा है। यही वो भूमि है जिसने पूरे विश्व को वैशाली के जरिए डेमोक्रेसी का पाठ पढ़ाया। हम चाहते हैं कि मिथिला एक अलग स्टेट बने, जिससे उसका विकास हो। सभी धर्म, जाति और जिले के समग्र लोग एक साथ आ चुके हैं। बाढ़ मिथिला की सबसे बड़ी समस्या है। आजादी से पहले ही 'लार्ड वेबेल' ने इसके लिए खास प्रोजेक्ट तैयार किया था। कोसी के बाराह इलाके में हाई डैम बनाना था। इससे मिथिलांचल बाढ़ की तबाही से बचता। लेकिन आजादी के बाद बिहार सरकार ने बहाने बनाकर इस प्रोजेक्ट को ठंडे बस्ते में डाल दिया। अगर इन प्रोजेक्ट्स पर ढंग से काम हो और कोसी नदी पर हाइड्रो पॉवर प्लांट्स लगाएं जाएं तो इससे इतनी एनर्जी जेनरेट होगी कि बिहार और मिथिला ही नहीं पूरे भारत को जगमगाया जा सकता है। मिथिला राज्य को लेकर हमने दरभंगा में भी बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार का घेराव किया था। हम युवा हैं और इतिहास गवाह है कि जीत हमेशा युवाओं की ही हुई है।" पूर्व क्रिकेटर और दरभंगा के पूर्व सांसद कीर्ति आजाद भी मिथिला राज्य के आंदोलन में काफी एक्टिव रहे हैं। संसद में उन्होंने मिथिला राज्य के लिए प्राइवेट मेंम्बर्स बिल प्रस्तावित कराया था।

मिथिला राज्य के मुद्दे पर भूतपूर्व सांसद कीर्ति आजाद का कहना है, "हम 15वीं लोकसभा में मिथिला राज्य के लिए प्राइवेट मेंम्बर्स बिल लेकर आ चुके हैं। साथ ही 377 के अंतर्गत जब संविधान सभा बनी थी और संविधान पर चर्चा हो रही थी, उस समय में यह तय हुआ था कि भाषा के आधार पर राज्य बनेगा। जैसे, ओड़िया बोलने वालों के लिए ओडिशा, कन्नड़ बोलने वालों के लिए कर्नाटक, मलयालम बोलने वालों के लिए केरल, मराठी बोलने वालों के लिए महाराष्ट्र, ऐसे ही और राज्य भी बने। पर मैथिली भाषा तो पूरे भारत में सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। ऐसे में मिथिला राज्य तो बनाना ही चाहिए।"

मैथिली बोलने वाले इलाकों में अलग राज्य के समर्थक सोशल मीडिया से लेकर जमीनी स्तर तक जनमत बनाने में जुटे हैं। पर एक सच्चाई यह भी है कि बिहार में ही मगही और भोजपुरी बोलने वाले लोग अलग मिथिला राज्य का विरोध करते हैं। उनका कहना है बिहार से पहले ही दो राज्य ओडिशा और झारखंड निकल चुके हैं। ऐसे में मिथिला राज्य बनाने से बिहार काफी कमजोर हो जाएगा और इसका राजनीतिक महत्व भी कम हो जाएगा।

## राजनैतिक अंतर्विरोध

अक्सर ऐसा देखा गया है कि जब भी कभी नए राज्य को बनाने की बात होती है तो लोग वैचारिक रूप से दो खेमों में बंट जाते हैं। एक खेमा नए राज्य बनाने के समर्थन में होता है और दूसरा खेमा उसके विरोध में। समर्थन वाले खेमे का कहना होता है कि नए और छोटे राज्य बनने से गवर्नेंस करने में सुविधा होती है। योजनाओं को लागू कराने में भी दिक्कत नहीं आती और ऐसे में विकास का काम भी तेजी से हो जाता है। उनकी एक दलील यह भी

होती है कि जब अमेरिका जैसा देश, जिसकी आबादी हमसे चार गुना कम है। वहां अगर पचास राज्य हो सकते हैं तो बड़ी आबादी वाले भारत में क्यों नहीं हो सकता। वहीं नए और छोटे राज्य के विरोधी कहते हैं कि राज्य जितना छोटा होगा लोगों की सोच भी उतनी ही छोटी होती जाएगी। इस सबके बावजूद भी नए और छोटे राज्यों की मांग होती रहती है और नए छोटे राज्य बनाए जाते रहे हैं।

## परिणाम एवं निष्कर्ष

भौगोलिक दृष्टि से मिथिला क्षेत्र मूल रूप से दो देशों में फैला हुआ है। एक हिस्सा भारत के बिहार राज्य में है और दूसरा नेपाल में है। नेपाल को मिथिला का यह इलाका 1816 में हासिल हुआ था। 1816 में ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के राजा के बीच सुगौली ट्रीटी (संधि) हुई थी। इस ट्रीटी में मिथिला का उत्तरी क्षेत्र (भूभाग-जनकपुर, धनुषा, विराटनगर, वीरगंज जैसे जिले) नेपाल को दे दिया गया। और नेपाल से गढ़वाल, कुमाऊं, सिक्किम, दार्जिलिंग जैसे इलाके ब्रिटिश इंडिया में मिला लिए गए। इसी प्रकार 2000 में जब झारखंड अलग राज्य बना, तब मैथिली बोलने वाला एक जिला देवघर झारखंड में चला गया।

बिहार में इस समय मैथिली बोलने वाले 24 जिले हैं। इसी कारण से अलग 'मिथिलांचल' राज्य मांगने का आधार भाषा है। जिन जिलों में मैथिली बोली जाती है उन जिलों को लेकर राज्य बनाने की बात हो रही है। मैथिली भाषा की कुल चार बोलियां हैं। ये चारों बोलियां हैं वैदेही, वज्जिका, अंगिका और सूर्यपुरी। मिथिला राज्य की मांग तो जोर-शोर से हो रही है। यह एक अलग राज्य बनता है कि नहीं बनता है यह सरकार को तय करना है। लेकिन इसके नाम पर एक आंदोलन तो जरूर खड़ा किया जा रहा है।

एक समय था जब मिथिला देश का सबसे उन्नत औद्योगिक क्षेत्र हुआ करता था। लगभग सभी जिले में कोई ना कोई औद्यौगिक उद्यम या कारखाना स्थापित था। आज मिथिला लेबर जोन बन गया है। आज यहां के सारे मिल और उद्योग बंद हो चुके हैं। यहां आने वाले ट्रक आज भर कर आते हैं और जाते वक्त खाली होते हैं। मिथिलांचल के लोग दिल्ली और पंजाब के भरोसे बैठे हुए हैं। आंदोलनकारियों के मुताबिक मिथिला राज्य बनने से उद्योग, रोजगार, विकास के हजारों मौका उत्पन्न होगा। हरेक जिले में यह अभियान शुरू हो चुका है।

## संदर्भ


1. सुरेश्वर झा - पोलिटिकल थिंकर्स इन मिथिला, मिथिला इन्स्टीच्यूट, दरभंगा-2005.
2. डा. राम प्रकाश शर्मा: मिथिला का इतिहास, पेज-348
3. जनरल ऑफ दि बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, भाग-3, पेज-516
4. वाचस्पति गैरोल एवं तारिणीश झा (सं°) - राजनीतिरत्नाकर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970.
5. राधाकृष्ण चौधरी: मिथिला इन द ऐज ऑफ विद्यापति, पेज- 53
6. म0 म0 परमेश्वर झा: मिथिला तत्व विमर्श, पेज- 40
7. आर0 एन0 दासः मिथिला दर्पण, भाग-2, पेज- 16
8. डा. उपेन्द्र ठाकुर: हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पेज- 211
9. इन्दिरा मिश्रा (सं°) - एस्पेक्ट्स ऑफ पोलिटकल आइडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स इन मेडियावल मिथिला।
10. कुमार, संतोष (2011-12) बिहार का भूगोल, स्टुडेन्ट बुक सेन्टर, पटना।
11. अताउल्लाह, मोहम्मद (2008) बिहार का आधुनिक भूगोल, ब्रिलियन्ट प्रकाशन, पटना।
12. वर्मा, पी0सी0 (2004): बिहार की अर्थव्यवस्था, तिरूपति प्रकाशन, पटना।
13. हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र, अक्टूबर, 2009
14. अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, बिहार सरकार, पटना।